आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा

1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-137 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | फरवरी 2026 | मूल्य - 5 रूपए

संघर्ष के सायों में सफलता की परीक्षा देते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर काजल, अंजलि, ज्योति, दामिनी, किशन

वर्तमान समय में पूरे देश के स्कूलों में वार्षिक परीक्षाओं का माहौल बना हुआ है। परीक्षाओं की शुरूआत होते ही न केवल बच्चों के जीवन में बदलाव आता है, बल्कि अभिभावकों की चिंताएँ भी बढ़ जाती हैं। सुबह के समय परीक्षा केंद्रों के बाहर हलचल साफ दिखाई देती है, जहाँ बच्चे आत्मविश्वास और घबराहट के मिले-जुले भाव के साथ अपनी परीक्षा देने पहुँचते हैं। यह समय बच्चों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव होता है, क्योंकि इन परीक्षाओं के परिणाम उनके भविष्य की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परीक्षा के इस दौर में बच्चों की दिनचर्या पूरी तरह बदल जाती है। देर रात तक पढ़ाई करना, सुबह जल्दी उठकर दोहराव करना और समय का सही उपयोग करना उनकी आदत बन जाती है। सामान्य परिस्थितियों में यह प्रक्रिया कठिन लग सकती है, लेकिन जब बात सड़क एवं कामकाजी बच्चों की आती है, तो यह संघर्ष और भी अधिक गहरा हो जाता है। इन बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ अपने जीवन की अन्य जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है, जिसके कारण उनकी तैयारी कई बार प्रभावित होती है। इस वर्ष बालकनामा के माध्यम से हम ऐसे ही सड़क एवं कामकाजी बच्चों की कहानियाँ आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं, जो कठिन परिस्थितियों के बावजूद अपने सपनों को साकार करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

नोएडा, दिल्ली, लखनऊ, गुड़गांव और जयपुर जैसे विभिन्न शहरों में रहने वाले इन बच्चों ने अपनी मेहनत, लगन और दृढ़ निश्चय के बल पर यह साबित किया है कि यदि अवसर और मार्गदर्शन मिले, तो कोई भी बच्चा पीछे नहीं रह सकता। चेतना के वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों से जुड़े बच्चों ने इस वर्ष एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। पहली बार इन केंद्रों से जुड़े कई बच्चों ने कक्षा पाँचवीं और दसवीं की बोर्ड परीक्षाओं में भाग लिया है। यह उपलब्धि केवल एक शैक्षिक सफलता नहीं है, बल्कि उन बच्चों के आत्मविश्वास और उनके सपनों की दिशा में बढ़ते कदमों का प्रतीक है। यह उनके जीवन में एक नई शुरूआत का संकेत भी है, जहाँ वे अपनी पहचान बनाने की ओर अग्रसर हैं। जयपुर की बालकनामा रिपोर्टर दामिनी द्वारा बच्चों से की गई बातचीत में उनके अनुभव और भावनाएँ स्पष्ट रूप से सामने आती हैं।

जयपुर के जयसिंहपुरा के 16 वर्षीय बालक गोलू (परिवर्तित नाम), बताते हैं कि दस्तावेजों के अभाव में उनका सरकारी विद्यालय में प्रवेश नहीं हो पाया था। इस कठिनाई के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और ओपन बेसिक एजुकेशन के माध्यम से अपनी पढ़ाई जारी रखी और कक्षा आठ उत्तीर्ण की। अब जब उन्हें बोर्ड परीक्षा देने का अवसर मिला है, तो वे इसे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षण मानते हैं। वे बताते हैं कि शुरूआत में उन्हें डर महसूस हुआ, लेकिन अब उन्हें गर्व है कि वे भी अन्य बच्चों की तरह आगे बढ़ रहे हैं और अपने सपनों की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

इसी प्रकार 12 वर्षीय बालिका जया, (परिवर्तित नाम) अपने अनुभव साझा करते हुए बताती हैं कि पहले उन्हें काम के कारण पढ़ाई के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता था। धीरे-धीरे जब वे शिक्षा केंद्र से जुड़ीं, तो उनकी पढ़ाई के प्रति रुचि बढ़ने लगी। परीक्षा के समय उन्हें थोड़ी घबराहट महसूस हुई, लेकिन उन्होंने समय का सही प्रबंधन करते हुए अपने प्रश्नों को हल किया। अब उन्हें विश्वास है कि उनकी मेहनत रंग लाएगी और वे आगे भी अपनी पढ़ाई जारी रखेंगी। परीक्षा से पहले चेतना संस्था के कार्यकताओं द्वारा बच्चों को विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया गया। उन्हें उत्तर पुस्तिका को सही ढंग से भरने, प्रश्नों को ध्यान से पढ़ने, समय का संतुलन बनाए रखने और पहले सरल प्रश्नों को हल करने जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में समझाया गया। इसके साथ ही बच्चों को मानसिक रूप से मजबूत बनाने और तनाव को कम करने के लिए भी विभिन्न सुझाव दिए गए। इन प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव बच्चों के आत्मविश्वास में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बच्चों की तैयारी का एक महत्वपूर्ण पहलू उनका आपसी सहयोग भी रहा है। वे समूह में बैठकर पढ़ाई करते हैं, एक-दूसरे की सहायता करते हैं और अपने उत्तरों की समीक्षा करते हैं। शिक्षकों के मार्गदर्शन में वे अपनी गलतियों को समझते हैं और उन्हें सुधारने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार का सहयोगात्मक वातावरण न केवल उनकी शैक्षणिक तैयारी को मजबूत बनाता है, बल्कि उनमें टीम भावना और आत्मविश्वास भी विकसित करता है। गुड़गांव क्षेत्र में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार समुदाय में 939 बच्चे नियमित रूप से पढ़ाई कर रहे हैं, जिनमें से 472 बच्चे इस वर्ष वार्षिक परीक्षाओं में शामिल हुए हैं। इसके अलावा एक बालक दसवीं की बोर्ड परीक्षा की तैयारी कर रहा है। यह आँकड़े इस बात का प्रमाण हैं कि शिक्षा के प्रति जागरूकता धीरे-धीरे बढ़ रही है और अधिक बच्चे शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में इन समुदायों में शिक्षा की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। पहले जहाँ कई बच्चे विद्यालय नहीं जाते थे या बीच में पढ़ाई छोड़ देते थे, वहीं अब अधिक

शेष पृष्ठ 2 पर

त्योहार मनाने के लिए मेहनत करते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर आरव

सड़क और कामकाजी बच्चों का जीवन कई तरह की समस्याओं से घिरा रहता है। हर दिन उन्हें अपने जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। साल भर में कई तरह के त्योहार आते हैं, जिनमें लोग खुशियां मनाते हैं, नए कपड़े पहनते हैं और अपने परिवार के साथ समय बिताते हैं। लेकिन सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए त्योहारों की खुशियां उतनी आसान नहीं होतीं। उन्हें त्योहार मनाने के लिए भी काफी मेहनत करनी पड़ती है। इसी विषय को समझने के लिए बालकनामा के बाल पत्रकार दिल्ली के लाजपत नगर मार्केट में दौरे पर पहुंचे। मार्केट में जाकर देखा कि कई बच्चे अलग-अलग तरह के कामों में लगे हुए थे। कुछ बच्चे सामान उठाने में मदद कर रहे थे, तो कुछ लोग लोगों से पैसे मांगते हुए दिखाई दे रहे थे। इसी दौरान बाल पत्रकारों की नजर दो बच्चों पर पड़ी, जिनकी उम्र लगभग 11 और 14 वर्ष थी। जब उन बच्चों ने पत्रकारों को अपनी तरफ आते देखा तो वे घबरा गए और तेजी से भागने लगे। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें डर हो कि कोई उन्हें पकड़ने या नुकसान पहुंचाने आ रहा है। बाद में बाल पत्रकारों ने उन्हें प्यार से समझाया और उनसे बात करने की कोशिश की। थोड़ी देर बाद बच्चे सहज हुए और बातचीत करने लगे। 11 वर्ष के बालक राहुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वे नेहरू नगर की बस्ती में रहते हैं और

रोजाना लाजपत नगर मार्केट में पैसे मांगने के लिए आते हैं। उन्होंने बताया कि वे सुबह लगभग 10 बजे मार्केट पहुंच जाते हैं और दोपहर करीब 4 बजे तक यहीं रहते हैं। इसके बाद जो भी पैसे मिलते हैं, उन्हें लेकर घर वापस चले जाते हैं।

राहुल ने आगे बताया कि 14 फरवरी को शिवरात्रि का त्योहार आने वाला है और उनकी बस्ती में यह त्योहार बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि उनके पिताजी बेलदारी का काम करते हैं और माताजी घर पर ही रहती हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण घर का खर्चा चलाना भी काफी मुश्किल हो जाता है। राहुल ने कहा कि जब त्योहार आता है तो आसपास के कई बच्चों के पास नए और अच्छे कपड़े होते हैं। वे त्योहार के दिन अच्छे कपड़े पहनकर खुशी से त्योहार मनाते हैं। लेकिन उनके पिताजी के पास इतने पैसे नहीं होते कि वे उनके लिए नए कपड़े खरीद सकें। इसी वजह से राहुल और उनके जैसे कई बच्चे लाजपत नगर मार्केट में पैसे मांगने आते हैं, ताकि वे कुछ पैसे जमा कर सकें और शिवरात्रि के लिए नए कपड़े खरीद सकें। राहुल ने कहा, 'हमारी भी इच्छा है कि हम भी बाकी बच्चों की तरह अच्छे कपड़े पहनकर शिवरात्रि का त्योहार मना सकें।' यह बातचीत हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि जहां एक ओर कई बच्चे त्योहारों को खुशी और उत्साह के साथ मनाते हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ बच्चों को त्योहार की छोटी-छोटी खुशियों के लिए भी मेहनत करनी पड़ती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

विश्व सुरक्षित इंटरनेट दिवस पर बच्चों ने सीखी इंटरनेट सुरक्षा

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी
बातूनी रिपोर्टर रेहान

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा कर बच्चों से विश्व सुरक्षित इंटरनेट दिवस के अवसर पर उनके अनुभव जाने। सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बताया कि इस दिवस को उन्होंने हर्ष और उल्लास के साथ मनाया। बच्चों ने कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें इंटरनेट के वैश्विक महत्व, उसके सही उपयोग और ऑनलाइन रहते समय स्वयं को सुरक्षित रखने के तरीकों के बारे में विस्तार से जानकारी मिली। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग के प्रति जागरूक करना और उन्हें साइबर अपराधों से बचाव की जानकारी देना था, ताकि बच्चे न केवल स्वयं सुरक्षित रह सकें बल्कि अपने परिवार और समाज को भी जागरूक कर सकें। इस अवसर पर बच्चों ने इंटरनेट सुरक्षा का संदेश अनोखे और रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया। किसी बच्चे ने मोबाइल फोन का रूप धारण किया, तो कोई इंटरनेट, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, फेसबुक, गेम ऐप, प्ले स्टोर और गूगल बनकर मंच पर प्रस्तुत हुआ। बच्चों ने नाटक, क्विज और रोचक खेलों के माध्यम से इन डिजिटल माध्यमों के फायदे, नुकसान और उनके सुरक्षित उपयोग के तरीकों को समझाया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों को साइबर बुलिंग, फर्जी लिंक, ऑनलाइन ठगी और इंटरनेट के गलत इस्तेमाल से होने वाले खतरों के बारे में भी विस्तार से बताया गया। बच्चों को यह भी समझाया गया कि किसी अनजान व्यक्ति से ऑनलाइन बातचीत करते समय सावधानी बरतना क्यों जरूरी है।13 वर्षीय बालक रेहान (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'पहले मुझे लगता था कि इंटरनेट सिर्फ गेम खेलने के लिए होता है, लेकिन आज मुझे समझ आया कि इसका गलत इस्तेमाल हमें परेशानी में डाल सकता है। अब अगर कोई अजनबी मुझे मैसेज करेगा या कोई गलत लिंक भेजेगा, तो मैं उसे नहीं खोलूंगा और इस बारे में घर पर जरूर बताऊंगा।' कार्यक्रम के अंत में बच्चों ने अपने हाथों की आकृतियाँ बनाकर इंटरनेट सुरक्षा की शपथ ली। बच्चों ने संकल्प लिया कि वे ऑनलाइन गेम्स में पैसे नहीं लगाएंगे, अनुचित फोटो और वीडियो से दूर रहेंगे तथा इंटरनेट का उपयोग सकारात्मक और शैक्षिक कार्यों के लिए करेंगे। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यदि उन्हें किसी प्रकार का साइबर अपराध दिखाई देता है, तो वे तुरंत इसकी जानकारी साझा करेंगे। इस आयोजन ने बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें डिजिटल दुनिया में सतर्क और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा दी।

कम उम्र में जुए की ओर बढ़ते बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर आसिफ

दिल्ली के कमला नेहरू कैंप की झुग्गी बस्ती में कुछ बच्चे जुए की गलत आदत की ओर बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। यह स्थिति चिंताजनक है, क्योंकि कम उम्र में ऐसी आदतें बच्चों के भविष्य और पढ़ाई पर नकारात्मक असर डाल सकती हैं। बालकनामा के बाल पत्रकार जब इस क्षेत्र के दौरे पर पहुंचे, तो स्थानीय लोगों से बातचीत के दौरान यह बात सामने आई कि बस्ती में कुछ बच्चे आपस में पैसे लगाकर जुआ खेलते हैं। लोगों का कहना है कि कुछ बच्चे घर से पैसे निकालकर या अपनी पॉकेट मनी से यह खेल खेलते हैं। कई बार बच्चे समूह बनाकर खाली समय में जुआ खेलने लगते हैं। बालकनामा रिपोर्टर से बातचीत के दौरान 15 वर्षीय सुनील (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मुझे पैसे लगाकर खेलना अच्छा लगता है, इसलिए मैं अपने दोस्तों के साथ खेलता हूँ।' सुनील ने यह भी बताया कि कई बार बच्चे मजाक-मजाक में खेल शुरू करते हैं, लेकिन धीरे-धीरे यह आदत बन जाती है। विशेषज्ञों के अनुसार कम उम्र में जुए की आदत लगना बच्चों के मानसिक और सामाजिक विकास के लिए हानिकारक हो सकता है। इससे बच्चों का ध्यान पढ़ाई से हट सकता है और वे गलत संगत में भी पड़ सकते हैं। कई बार बच्चे पैसे हारने के बाद फिर से पैसे लाने के लिए गलत कदम भी उठा सकते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों को खेल, पढ़ाई और रचनात्मक गतिविधियों की ओर प्रेरित करना बहुत जरूरी है। अगर बच्चों को सकारात्मक गतिविधियों में शामिल किया जाए तो वे अपनी ऊर्जा अच्छे कामों में लगा सकते हैं। साथ ही अभिभावकों को भी बच्चों की गतिविधियों पर ध्यान देने और उन्हें सही मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है, ताकि वे ऐसी गलत आदतों से दूर रह सकें। यह भी जरूरी है कि समाज, अभिभावक और संबंधित विभाग मिलकर बच्चों के लिए सुरक्षित और सकारात्मक वातावरण तैयार करें, ताकि उनका बचपन सही दिशा में आगे बढ़ सके।

संघर्ष के सायों में सफलता की परीक्षा देते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

पृष्ठ 1 का शेष

बच्चे नियमित रूप से विद्यालय जा रहे हैं और अपनी पढ़ाई को गंभीरता से ले रहे हैं। अभिभावकों का दृष्टिकोण भी बदला है और वे अब अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा को आवश्यक मानने लगे हैं। हालाँकि, इन बच्चों के सामने अभी भी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। पढ़ाई के लिए शांत वातावरण का अभाव, संसाधनों की कमी, उचित मार्गदर्शन का अभाव और आर्थिक दबाव जैसी समस्याएँ उनकी तैयारी को प्रभावित करती हैं। कई बच्चों को अपने परिवार की सहायता के लिए काम भी करना पड़ता है, जिससे उनके लिए पढ़ाई और काम के बीच संतुलन बनाना कठिन हो जाता है। इसके बावजूद, परिवार, शिक्षक और सामाजिक संस्थाएँ जैसे चेतना बच्चों को निरंतर सहयोग प्रदान कर रही हैं। शिक्षक उन्हें पढ़ाई में मार्गदर्शन देते हैं, संस्थाएँ उन्हें अतिरिक्त सहायता और प्रेरणा प्रदान करती हैं और परिवार उन्हें आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करता है। इन सभी के संयुक्त प्रयासों से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ रहा है और वे अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं। परीक्षा को लेकर बच्चों की भावनाएँ भी विविध हैं। कुछ बच्चे परीक्षा को लेकर तनाव महसूस करते हैं, जबकि कई बच्चे आत्मविश्वास और उत्साह के साथ परीक्षा का सामना करते हैं। समूह में पढ़ाई करने और एक-दूसरे का सहयोग करने से उनका आत्मविश्वास और भी बढ़ता है। इन सभी परिस्थितियों के बीच एक बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि इन बच्चों के सपने बहुत बड़े हैं। कोई डॉक्टर बनना चाहता है, कोई पुलिस अधिकारी, कोई शिक्षक या इंजीनियर। शिक्षा ही वह माध्यम है जो उनके इन सपनों को साकार कर सकती है और उन्हें एक सुरक्षित और बेहतर भविष्य की ओर ले जा सकती है।

इसी क्रम में दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों ने भी अपने अनुभव साझा किए। पश्चिम दिल्ली की एक बस्ती में रहने वाले बच्चों ने बताया कि उनके परिवार अब पहले से अधिक उनकी पढ़ाई को महत्व देने लगे हैं। अभिभावक चाहते हैं कि उनके बच्चे उन परिस्थितियों से बाहर निकलें जिनका सामना उन्हें स्वयं अपने जीवन में करना पड़ा। यही कारण है कि वे बच्चों को पढ़ाई के लिए हर संभव सहयोग देने का प्रयास करते हैं। हालाँकि, बच्चों ने यह भी बताया कि कई बार विद्यालय में उन्हें अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाता। परीक्षा के दौरान जब कोई प्रश्न समझ में नहीं आता और वे अध्यापकों से सहायता लेने की कोशिश करते हैं, तो कुछ स्थितियों में उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। इससे बच्चों के आत्मसम्मान पर भी असर पड़ता है और वे असहज महसूस करते हैं। इसके बावजूद वे अपनी मेहनत और प्रयास को जारी रखते हैं। एक बच्चे ने बताया कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अपना स्वयं का व्यापार शुरू करना चाहता है, ताकि वह अपने परिवार को बेहतर जीवन दे सके।

पश्चिम दिल्ली के शिवाजी पार्क के निकट रहने वाली 10 वर्षीय बालिका नैना (परिवर्तित नाम), जो कक्षा पाँचवीं में अध्ययनरत है, बताती है कि उसकी बस्ती में लगभग 970 बच्चे हैं, जिनमें से कई बच्चे आज भी स्कूल नहीं जाते। कुछ बच्चे कामकाज में लगे हुए हैं, कुछ के पास आवश्यक दस्तावेज नहीं हैं, और कुछ बच्चों में पढ़ाई के प्रति रुचि की कमी है। नैना बताती है कि कुछ वर्ष पहले उसे हिंदी भाषा ठीक से नहीं आती थी, लेकिन अब उसने मेहनत के साथ हिंदी सीख ली है। उसके परिवार का सहयोग उसे लगातार मिलता है और वे उसे पढ़ाई के लिए प्रेरित करते हैं। नैना यह भी बताती है कि परीक्षा के समय सभी बच्चों को स्वाभाविक रूप से डर लगता है। कई बार विद्यालय में अध्यापक कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न बता देते हैं, जिनकी तैयारी बच्चे करते हैं, लेकिन परीक्षा में प्रश्न अलग रूप में आने पर बच्चों को घबराहट होती है। इसके साथ ही उसे घर के कामकाज जैसे बर्तन धोना और खाना बनाना भी करना पड़ता है। ऐसे में वह समय प्रबंधन करने की कोशिश करती है, ताकि पढ़ाई और घर की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बना सके। वह डॉक्टर बनकर अपने जीवन को बेहतर बनाना चाहती है, लेकिन आर्थिक परिस्थितियाँ उसके सामने एक बड़ी चुनौती के रूप में खड़ी हैं।

नोएडा के सेक्टर 115 में रहने वाले 15 वर्षीय बालक शिव (परिवर्तित नाम) बताते हैं कि वे वर्तमान में कक्षा आठवीं में पढ़ रहे हैं। उनके क्षेत्र में बड़ी संख्या में बच्चे रहते हैं, जिनमें से अधिकांश वार्षिक परीक्षाओं में शामिल हो रहे हैं। शिव बताते हैं कि पहले वे पढ़ाई को लेकर गंभीर नहीं थे, लेकिन जैसे-जैसे वे उच्च कक्षाओं में पहुँचे, उन्होंने पढ़ाई के महत्व को समझा और अब वे नियमित रूप से पढ़ाई पर ध्यान दे रहे हैं। उनके परिवार का सहयोग उन्हें निरंतर मिलता है और उनकी बहन भी पढ़ाई में उनका मार्गदर्शन करती है। शिव बताते हैं कि कई बार परीक्षा में ऐसे प्रश्न आ जाते हैं जो पाठ्यपुस्तक से अलग होते हैं, जिससे उन्हें समझने में कठिनाई होती है। इसके बावजूद वे पूरी मेहनत के साथ अपने उत्तर देने का प्रयास करते हैं। वे चेतना संस्था से मिलने वाले सहयोग का भी उल्लेख करते हैं, जहाँ से उन्हें पढ़ाई से संबंधित आवश्यक सामग्री और मार्गदर्शन प्राप्त होता है। उनका सपना है कि वे आगे चलकर अपने जीवन में एक अच्छा मुकाम हासिल करें और अपने माता-पिता को खुशियाँ दे सकें।

इसी तरह नोएडा सेक्टर 62 के निकट रहने वाली 14 वर्षीय बालिका पूजा (परिवर्तित नाम) अपने अनुभव साझा करते हुए बताती है कि वह अपनी माँ के साथ झुग्गी में रहती है और वर्तमान में कक्षा छठी की परीक्षा दे रही है। उनके क्षेत्र में कई बस्तियाँ हैं, जहाँ रहने वाले अधिकांश बच्चे कामकाज में लगे हुए हैं और केवल कुछ ही बच्चे नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त कर पा रहे हैं। पूजा बताती है कि जैसे-जैसे कक्षाएँ बढ़ती हैं, पढ़ाई कठिन होती जाती है और विषयों को समझना और याद करना भी चुनौतीपूर्ण हो जाता है। पूजा के जीवन में आर्थिक और सामाजिक चुनौतियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। उनके पिता उनके साथ नहीं हैं और उनकी माँ ही परिवार की जिम्मेदारी निभाती हैं। इसके साथ ही पूजा को घर के कामकाज और छोटी दुकान में भी अपनी माँ की मदद करनी पड़ती है। वह बताती है कि परीक्षा के समय सबसे बड़ी समस्या बिजली की होती है, क्योंकि बार-बार बिजली जाने से पढ़ाई प्रभावित होती है। कई बार उसे रात भर जागकर पढ़ाई करनी पड़ती है, जिससे मानसिक दबाव बढ़ जाता है। इसके बावजूद पूजा पढ़ाई के प्रति अपना उत्साह बनाए रखती है। वह बताती है कि चेतना संस्था के कार्यकर्ता बच्चों को समय-समय पर मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें अपनी तैयारी बेहतर करने में मदद मिलती है। उसका सपना है कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करके उन बच्चों को शिक्षा दे, जो आज भी विभिन्न समस्याओं के कारण पढ़ाई से दूर हैं। विभिन्न स्थानों से आए इन अनुभवों से यह स्पष्ट होता है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए परीक्षा केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह उनके आत्मविश्वास, संघर्ष और सपनों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर है। ये बच्चे सीमित संसाधनों और अनेक कठिनाइयों के बावजूद अपनी मेहनत और लगन से यह साबित कर रहे हैं कि यदि सही मार्गदर्शन और सहयोग मिले, तो वे भी अपने जीवन में सफलता की नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पहली बार बोर्ड परीक्षा में बैठे सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी
बातूनी रिपोर्टर जया

इस वर्ष चेतना संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र से जुड़े सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने पहली बार 5वीं और 10वीं बोर्ड परीक्षा में हिस्सा लेकर एक नया इतिहास रचा है। यह केवल एक परीक्षा नहीं, बल्कि उनके सपनों की ओर बढ़ता हुआ एक बड़ा और महत्वपूर्ण कदम है।बालकनामा रिपोर्टर दामिनी द्वारा बच्चों से की गई बातचीत में उनकी खुशी और उत्साह साफ दिखाई दे रहा था। बच्चों के चेहरों पर आत्मविश्वास और उम्मीद की झलक थी। 16 वर्षीय बालक गोलू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि दस्तावेजों के अभाव में उनका सरकारी विद्यालय में दाखिला नहीं हो पाया था। इसके बाद उन्होंने ओपन बेसिक एजुकेशन के माध्यम से कक्षा 8 उत्तीर्ण की। गोलू ने कहा, 'हमें बहुत अच्छा लग रहा है कि हम भी अब बोर्ड परीक्षा दे रहे हैं। शुरूआत में थोड़ा डर जरूर था क्योंकि यह पहली बार है, लेकिन गर्व इस बात का है कि हमारे सेंटर के बच्चे अब बोर्ड तक पहुँच रहे हैं।' 12 वर्षीय बालिका जया (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मैं पहले पढ़ाई से दूर थी क्योंकि मुझे काम पर जाना पड़ता था। लेकिन सेंटर से जुड़ने के बाद धीरे-धीरे पढ़ाई में मन लगने लगा। बोर्ड परीक्षा के दिन थोड़ा डर लग रहा था, पर मैंने समय देखकर सवाल हल किए। पेपर खत्म होने के बाद लगा कि मेरी मेहनत सफल हुई।' परीक्षा से पहले सेंटर पर चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं ने बच्चों को विशेष मार्गदर्शन भी दिया। उन्हें बताया गया कि रोल नंबर सही तरीके से कैसे भरना है, पहले बड़े प्रश्नों को कैसे हल करना

है, समय का सही प्रबंधन कैसे करना है और शांत मन से पेपर कैसे देना है। साथ ही बच्चों को तनाव कम करने के लिए भी कई उपयोगी सुझाव दिए गए, जिससे उनका आत्मविश्वास और बढ़ गया। बच्चों ने बोर्ड परीक्षा की तैयारी के लिए काफी मेहनत की। वे आपस में बैठकर प्रश्नपत्र हल करते थे, एक-दूसरे की मदद करते थे और एजुकेटर के मार्गदर्शन में अपने उत्तरों की जांच करते थे। इसके बाद वे चर्चा करते कि कितने सवाल सही हुए और कहाँ सुधार की जरूरत है। इस तरह का आपसी सहयोग और सीखने का माहौल उनकी तैयारी को और मजबूत बना रहा था। परीक्षा के दिन बच्चों का लाइव प्रसारण भी किया गया, जिससे उनका उत्साह और बढ़ गया। इस पहल से बच्चों के मन में बोर्ड परीक्षा का डर कम हुआ और उनके अंदर नई उम्मीद और आत्मविश्वास जागा। इन बच्चों के लिए यह परीक्षा केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह साबित करने का एक अवसर है कि यदि बच्चों को सही अवसर और मार्गदर्शन मिले, तो वे भी अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं और जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

सड़क किनारे तंबू में असुरक्षा और अभाव से जूझता बचपन

बालकनामा रिपोर्टर दीपक
बातूनी रिपोर्टर दिनेश

बालकनामा रिपोर्टर दीपक द्वारा जयपुर की जामडोली बस्ती का दौरा किया गया। इस दौरान बातूनी रिपोर्टर दिलीप से बातचीत की गई। दिलीप ने बताया कि वह जिस रास्ते से प्रतिदिन स्कूल जाता है, वहाँ पिछले कई दिनों से एक परिवार सड़क किनारे तंबू लगाकर रह रहा है। उस परिवार में दो छोटे बच्चे और उनके माता-पिता रहते हैं। इस बारे में अधिक जानकारी लेने के लिए बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत की। बच्चों ने बताया कि उनका कोई स्थायी घर नहीं है, इसलिए वे सड़क किनारे तंबू लगाकर रहने को मजबूर हैं। उनके माता-पिता कचरा बीनने का काम करते हैं और उस समय काम पर गए हुए थे। उस समय दोनों भाई-बहन तंबू में अकेले मौजूद थे।

बच्चों से बातचीत के दौरान यह भी सामने आया कि सड़क किनारे रहना उनके लिए बहुत चुनौतीपूर्ण है। परिवर्तित नाम बालक दिनेश (लगभग 10 वर्ष) ने बताया कि रात में उन्हें बहुत डर लगता है, क्योंकि आसपास अजनबी लोग आते-जाते रहते हैं। तेज रफ्तार से गुजरने वाली गाड़ियों का शोर और दुर्घटना का खतरा हमेशा बना रहता है।

बरसात के समय तंबू में पानी भर जाता है और ठंड के मौसम में पर्याप्त गर्म कपड़े न होने के कारण काफी परेशानी होती है। बच्चों ने यह भी बताया कि उनकी पढ़ाई नियमित रूप से नहीं हो पाती, क्योंकि कई बार उन्हें अपने माता-पिता के साथ काम पर जाना पड़ता है या छोटे भाई-बहनों की देखभाल करनी पड़ती है। इसके अलावा साफ पानी, शौचालय और सुरक्षित खेलने की जगह का अभाव भी उनके दैनिक जीवन की बड़ी समस्या है। यह स्थिति दिखाती है कि सड़क किनारे रहने वाले बच्चों को सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और संरक्षण से जुड़ी कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे बच्चों के जीवन में सुधार के लिए संबंधित विभागों और समाज को संवेदनशीलता के साथ ध्यान देने की आवश्यकता है।

शौचालय की खराब हालत से बस्ती के लोग परेशान

बातूनी रिपोर्टर आकाश व रिपोर्टर किशन

जब सरकारी सुविधाएं होने के बावजूद उनकी सही देखभाल नहीं होती, तो लोगों को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी ही एक समस्या नोएडा सेक्टर-62 के पास स्थित बस्तियों में देखने को मिली। बालकनामा के पत्रकारों से बातचीत में 13 वर्ष के एक बालक (परिवर्तित नाम दिलीप) ने बताया कि वे जिस बस्ती में रहते हैं, वहां काफी संख्या में झुग्गियां हैं। बस्ती के आसपास चारों तरफ फैक्ट्रियां हैं और पास में एक पेपर सेंटर भी मौजूद है। बस्ती से थोड़ी दूरी पर एक सरकारी मूत्रालय और शौचालय बना हुआ है, लेकिन वर्तमान में उसकी हालत बहुत खराब हो चुकी है।दिलीप ने बताया कि शौचालय के अंदर हाथ धोने की जगह, नल और मूत्रालय की कई चीजें टूटी हुई हैं। वहां से बहुत तेज गंदी बदबू भी आती है, जिसके कारण लोग उस शौचालय का उपयोग नहीं करना चाहते। समस्या यह है कि जब लोग उस शौचालय का उपयोग नहीं कर पाते, तो कई फैक्ट्री के कर्मचारी और पेपर सेंटर पर आने-जाने वाले लोग बस्ती के आसपास ही पेशाब करने लगते हैं। वे यह नहीं देखते कि बस्ती में महिलाएं और लड़कियां भी बैठी

रहती हैं। उनके सामने ही इस तरह की हरकत होने से बच्चों और महिलाओं को शर्मिंदगी महसूस होती है। दिलीप ने आगे बताया कि पहले इस शौचालय पर एक कर्मचारी बैठता था, जो उसकी देखभाल करता था और सफाई भी करवाता था। लेकिन कुछ समय से वह कर्मचारी यहां नहीं बैठता है। उसका कहना है कि पहले उसे समय पर पैसे मिल जाते थे, लेकिन अब भुगतान नहीं मिल रहा है, इसलिए वह शौचालय की देखभाल नहीं कर पा रहा। देखभाल न होने के कारण यह सरकारी शौचालय अब गंदगी से भरा हुआ है और लोगों के इस्तेमाल के लायक नहीं रह गया है। बस्ती में रहने वाले बच्चों का कहना है कि संबंधित विभाग को जल्द से जल्द इस शौचालय की मरम्मत करवानी चाहिए और उसकी नियमित सफाई सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि लोगों को परेशानी न हो और बस्ती के आसपास इस तरह की असहज स्थिति पैदा न हो।

आवारा पशु के हमले से मासूम हुआ घायल

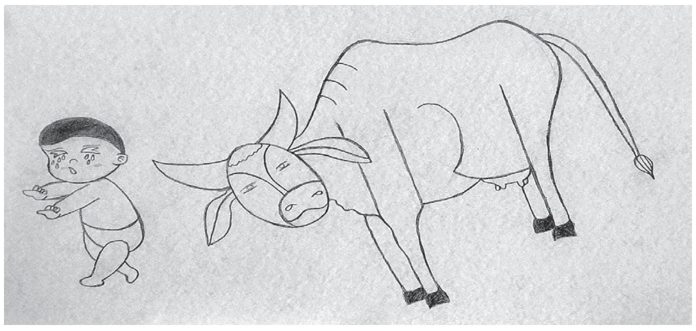

बालकनामा रिपोर्टर फारूख

गुरुग्राम के वजीराबाद सेक्टर-52 स्थित साईं मंदिर के पास एक बालक के घायल होने की घटना सामने आई है। यह घटना कुछ दिन पहले की बताई जा रही है।बालकनामा के रिपोर्टर फारूख जब क्षेत्र का दौरा करने पहुंचे, तो उन्हें इस घटना के बारे में जानकारी मिली। आसपास के लोगों से बात करने पर पता चला कि अजारूल (परिवर्तित नाम), जिसकी उम्र लगभग 6 वर्ष है, अपने घर के पास खेल रहा था। उसी समय अचानक पीछे से एक गाय ने उस पर हमला कर दिया। गाय के हमले से बच्चा बुरी तरह घायल हो गया। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों और परिजनों ने तुरंत बच्चे को पास के अस्पताल पहुंचाया। अस्पताल में डॉक्टरों ने बच्चे का इलाज किया। प्राथमिक उपचार करने के बाद डॉक्टरों ने शाम को बच्चे को घर भेज दिया। इस घटना के बाद बच्चे के माता-पिता पास में रहने वाले तबेले वालों के पास शिकायत करने पहुंचे और उनसे इस बारे में बात की। हालांकि तबेले के लोगों ने कहा कि यह गाय उनकी नहीं है। बालकनामा रिपोर्टर ने इस घटना के बारे में आसपास के लोगों से भी बातचीत की। स्थानीय लोगों ने बताया कि यह गाय पहले भी कई लोगों पर हमला कर चुकी है। कुछ लोगों ने यह भी बताया कि कुछ समय पहले गाय के पिछले पैर को कुत्तों ने काट लिया था। इसके बाद से वह गाय आक्रामक हो गई है और राह चलते लोगों पर हमला करने लगी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर इस तरह के आवारा और आक्रामक पशुओं पर ध्यान नहीं दिया गया, तो भविष्य में और भी हादसे हो सकते हैं। लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि इस समस्या का जल्द समाधान किया जाए, ताकि इलाके के बच्चे और राहगीर सुरक्षित रह सकें।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

जब बिल्ली बन गई सबसे अच्छी सहेली

बातूनी रिपोर्टर बबली व रिपोर्टर किशन

अधिकतर लोगों की मित्रता इंसानों से होती है, लेकिन सड़क और कामकाजी बच्चे अक्सर बिना किसी भेदभाव के दोस्त बना लेते हैं। उनके लिए दोस्ती का मतलब केवल साथ और अपनापन होता है, चाहे वह इंसान हो या कोई जानवर। बालकनामा के बाल पत्रकार नोएडा के चार मूर्ति के पास स्थित एक गांव में पहुंचे। यहां कुछ ऐसे बच्चों से मुलाकात हुई जो अपने परिवार के साथ किराए के मकान में रहते हैं। जब पत्रकार वहां पहुंचे तो देखा कि कुछ बच्चे एक बिल्ली के साथ खेल रहे थे। बच्चे उस बिल्ली के साथ बहुत खुश नजर आ रहे थे।पत्रकारों ने बच्चों से बातचीत की और उनके बारे में विस्तार से जाना।

14 वर्ष की एक बालिका रवीना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह अपने माता-पिता के साथ किराए के मकान में रहती है। उसके माता-पिता सुबह काम पर चले जाते हैं। रवीना और उसके भाई-बहन स्कूल जाते हैं और स्कूल से लौटने के बाद घर पर कुछ समय अकेले ही रहते हैं। उनके माता-पिता शाम को लगभग 7 से 8 बजे के बीच घर लौटते हैं। रवीना ने बताया कि जिस बिल्डिंग में वे रहते हैं, वहां उनकी कई सहेलियां भी रहती हैं। लेकिन उनकी एक खास सहेली और भी है, जिसका नाम सिम्मी है। सुनने में यह नाम किसी इंसान का

लगता है, लेकिन सिम्मी दरअसल एक छोटी सी बिल्ली है। रवीना ने मुस्कुराते हुए बताया कि शुरूआत में वह बिल्ली रोज उनके घर में आ जाती थी। वह दूध पी जाती थी और कभी-कभी घर के बर्तन भी गिरा देती थी। इससे वे लोग थोड़े परेशान भी हो जाते थे। लेकिन बाद में उन्होंने सोचा कि अगर बिल्ली को प्यार से खाना और दूध दिया जाए तो शायद वह शरारत नहीं करेगी। इसके बाद बच्चों ने उसे दूध और खाना देना शुरू किया। धीरे-धीरे वह बिल्ली उनके साथ घुल-मिल गई और उनकी अच्छी दोस्त बन गई। अब वह रोज उनके पास आती है, उनके साथ खेलती है और उन्हें परेशान भी नहीं करती। बच्चे भी उसका बहुत ध्यान रखते हैं। रवीना ने बताया कि कुछ दिन पहले सिम्मी की टांग में चोट लग गई थी। तब बच्चों ने उसे पास के सरकारी अस्पताल में ले जाकर उसका इलाज भी करवाया। अब सिम्मी बिल्कुल ठीक है और फिर से बच्चों के साथ खेलती है। रवीना ने कहा कि जब से सिम्मी उनकी सहेली बनी है, घर का माहौल और खुश हो गया है। बच्चे भी उसके साथ खेलकर खुश रहते हैं और घर के सभी लोग उसे बहुत प्यार करते हैं।

पेड़ों की रक्षा हमारी सुरक्षा

बातूनी रिपोर्टर शिवम व रिपोर्टर किशन

आज के समय में कई स्थानों पर और अलग-अलग राज्यों में जंगलों की कटाई लगातार बढ़ती जा रही है। बड़ी संख्या में पेड़ काटे जा रहे हैं, जिससे पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे में लोगों को अधिक से अधिक पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने की आवश्यकता है, ताकि पर्यावरण सुरक्षित रह सके और लोगों को स्वच्छ हवा मिलती रहे। इसी विषय को समझने के लिए बालकनामा के बाल पत्रकार नोएडा के चार मूर्ति के नजदीक एक गांव में दौरे पर पहुंचे। वहां एक किराए के मकान के पास एक दिलचस्प दृश्य देखने को मिला। लगभग 8 वर्ष का एक बच्चा (परिवर्तित नाम सोनू) अपने कमरे के पास मौजूद पेड़ों के आसपास सफाई कर रहा था। वह पेड़ों के चारों ओर गड्ढे बना रहा था और उनमें पानी भी डाल रहा था। यह देखकर पत्रकारों ने सोनू से बात की और पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है। सोनू ने बताया कि अब धीरे-धीरे

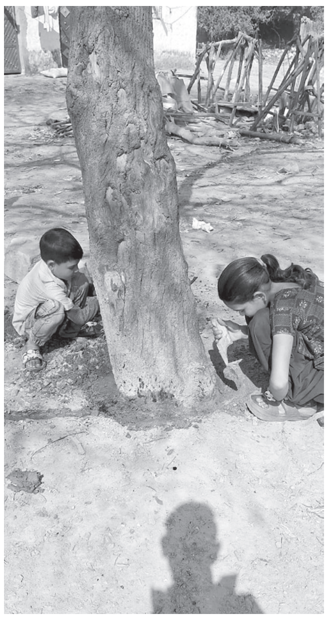

ठंड खत्म हो रही है और गर्मी बढ़ने लगी है। सुबह लगभग 8 बजे से लेकर शाम 5 बजे तक गर्मी का असर महसूस होने लगता है। उसने बताया कि उनके घर के पास एक छोटा सा खाली मैदान है, जहां लगभग 14-15 पेड़ लगे हुए हैं। सोनू ने बताया कि वह पिछले 7-8 दिनों से लगातार इन पेड़ों के आसपास सफाई कर रहा है और उनके चारों ओर गड्ढे बनाकर पानी दे रहा है। उसका कहना है कि अगर पेड़ों की अच्छी तरह देखभाल की जाए तो गर्मी के समय यहां ठंडी हवा मिलती है और वातावरण भी अच्छा रहता है। सोनू ने यह भी बताया कि वह इस समय दूसरी कक्षा में पढ़ता है। उसके स्कूल में भी बच्चों को पर्यावरण और पेड़ों के महत्व के बारे में बताया जाता है। वहीं से प्रेरित होकर उसने सोचा कि वह अपने आसपास के पेड़ों की देखभाल करेगा। सोनू ने कहा कि गर्मी के समय आसपास के कई लोग इस स्थान पर आकर बैठते हैं और ठंडी हवा का आनंद लेते हैं। आसपास के बच्चे भी यहां खेलते हैं क्योंकि यहां का वातावरण ठंडा और अच्छा रहता है। यह देखकर उसे बहुत खुशी होती है कि उसकी छोटी-सी कोशिश से लोगों को आराम मिलता है और वातावरण भी अच्छा बनता है।

सड़क से स्कूल तक पहुंचकर बच्चे ने चित्रकारी में जीता मेडल

बालकनामा रिपोर्टर अंजलि

जब बालकनामा रिपोर्टर अंजलि गुरुग्राम की एक बस्ती में समुदाय विजिट पर गईं, तो उन्होंने देखा कि एक बच्चा बहुत खुश दिखाई दे रहा था। उसके चेहरे पर अलग ही चमक थी। जैसे ही बच्चे ने बालकनामा रिपोर्टर अंजलि को देखा, वह उत्साह से उनके पास आया और अपनी खुशी जताने लगा। बच्चे ने बताया कि उसके स्कूल में हाल ही में एक चित्रकारी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता में उसकी कक्षा के कई बच्चों और स्कूल के अन्य विद्यार्थियों ने भी भाग लिया था। बच्चे ने खुशी से बताया कि उसने भी इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और उसे स्कूल में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। इसके लिए उसे एक मेडल भी दिया गया। बच्चा बड़े गर्व और उत्साह के साथ अपना मेडल रिपोर्टर अंजलि को दिखाने लगा। उसके चेहरे पर खुशी साफ दिखाई दे रही थी। यह देखकर बालकनामा रिपोर्टर अंजलि को भी बहुत अच्छा लगा।

रिपोर्टर अंजलि ने यह बात केंद्र के अन्य बच्चों को भी बताई और कहा कि यह वही बच्चा है जो पहले कूड़ा उठाने का काम करता था, लेकिन अब वह नियमित रूप से स्कूल जाता है और स्कूल की गतिविधियों तथा प्रतियोगिताओं में भी भाग ले रहा है। यह बाकी बच्चों के लिए भी एक बहुत अच्छी और प्रेरणादायक बात है। जब रिपोर्टर अंजलि ने बच्चे से पूछा कि उसने इतनी अच्छी चित्रकारी कैसे सीखी, तो बच्चे ने बताया कि उसे बचपन से ही ड्राइंग बनाना बहुत पसंद है। वह कई बार घर पर और केंद्र में खाली समय मिलने पर बैठकर चित्र बनाता रहता है। स्कूल में जब अध्यापक ने चित्रकारी प्रतियोगिता के बारे में बताया, तो उसने भी इसमें भाग लेने का फैसला किया। बच्चे ने बताया कि शुरूआत में उसे थोड़ी झिझक हो रही थी और वह सोच रहा था कि वह यह कर पाएगा या नहीं। लेकिन फिर उसने हिम्मत की और प्रतियोगिता में भाग लिया। बच्चे ने आगे बताया कि जब प्रतियोगिता के परिणाम घोषित हुए और उसे दूसरा स्थान मिला, तो स्कूल की हेड मैम ने उसकी सराहना की और उसे मेडल देकर सम्मानित किया। यह पल उसके लिए बहुत खास और गर्व का था। बच्चे ने खुशी से यह भी बताया कि जब उसने घर जाकर यह बात अपने परिवार को बताई, तो घर में भी बहुत खुशी का माहौल बन गया। उसके परिवार के लोग भी इस उपलब्धि से बहुत खुश हैं, क्योंकि आज तक उनके परिवार में किसी भी बच्चे को इस तरह का सम्मान नहीं मिला था।

मजबूरी की मार ने छीने बचपन के सपने

बालकनामा रिपोर्टर - धर्मराज
बातूनी रिपोर्टर - राधिका

गुरुग्राम की एक झुग्गी बस्ती में रहने वाला एक बच्चा आर्थिक तंगी के कारण अपना बचपन छोड़कर काम करने के लिए मजबूर हो गया है। जहां इस उम्र में बच्चों को स्कूल जाना चाहिए, दोस्तों के साथ खेलना चाहिए और पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए, वहीं यह बच्चा अपने परिवार की जिम्मेदारियां उठाने में लगा हुआ है।

बालकनामा टीम के रिपोर्टर धर्मराज जब बस्ती के दौरे पर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि एक बच्चा सड़क किनारे रेहड़ी लगाकर कपड़े बेच रहा है। पास जाकर बातचीत करने पर पता चला कि उसका नाम सुमन (परिवर्तित नाम, उम्र 13 वर्ष) है। सुमन काफी मेहनत से ग्राहकों को कपड़े दिखा रहा था और लोगों से उन्हें खरीदने के लिए कह रहा था। बातचीत के दौरान सुमन ने बताया कि वह यह काम अपनी खुशी से नहीं, बल्कि मजबूरी में कर रहा है। उसके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है।

सुमन ने बताया कि उसके पिता लंबे समय से बीमार हैं और बीमारी के कारण अब काम करने में सक्षम नहीं हैं। उनके इलाज और दवाइयों पर काफी खर्चा आता है, जिसे पूरा करना परिवार के लिए बहुत मुश्किल हो गया है। सुमन ने बताया कि पहले वह स्कूल जाता था। उसे पढ़ाई करना बहुत अच्छा लगता था और वह अच्छे कपड़े पहनकर स्कूल जाता था। स्कूल में अपने दोस्तों के साथ पढ़ना और खेलना उसे बहुत पसंद था। लेकिन पिता की बीमारी और घर की जिम्मेदारियों के कारण उसे अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। अब सुमन पूरे दिन रेहड़ी लगाकर कपड़े बेचता है। वह सुबह से शाम तक मेहनत करता है ताकि घर का कुछ खर्चा चल सके और अपनी मां की मदद कर सके। उसने बताया कि वह चाहता तो है कि फिर से स्कूल जाए, लेकिन अभी परिस्थितियां उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं देतीं। सुमन ने भावुक होकर कहा, 'मुझे पढ़ना बहुत पसंद है और मैं आगे पढ़ाई करना चाहता हूं। लेकिन अभी मेरे पास समय नहीं है। अगर मैं पढ़ाई नहीं करूंगा तो अपने सपनों को कैसे पूरा कर पाऊंगा? फिर भी इस समय मुझे अपने माता-पिता का साथ देना जरूरी लगता है। अगर ऐसे समय में मैं उनका सहारा नहीं बनूंगा, तो कब बनूंगा? मैं बस यही चाहता हूं कि मेरे पापा जल्दी ठीक हो जाएं और मैं फिर से स्कूल जा सकूं।' सुमन की ये दशा हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि आज भी कई बच्चे ऐसी परिस्थितियों में जी रहे हैं, जहां उन्हें अपने सपनों और पढ़ाई को छोड़कर परिवार की जिम्मेदारियां उठानी पड़ती हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

घर के झगड़ों के बीच अकेला पड़ता बचपन

बालकनामा रिपोर्टर फारूख
बातूनी रिपोर्टर अजारूल

जब बालकनामा के पत्रकारों ने गुरुग्राम के वजीराबाद क्षेत्र का दौरा किया, तो उन्हें 9 वर्षीय एक बालक आकाश (परिवर्तित नाम) की कहानी के बारे में पता चला। आकाश अपने माता-पिता के अलग होने के बाद अपनी दादी के साथ रहने को मजबूर है। उसके घर में उसकी दादी और बड़ी बहन ही उसके साथ रहते हैं। आकाश ने बताया कि जब वह छोटा था, तब उसके माता-पिता के बीच अक्सर झगड़े होते थे। घर में लगभग रोज ही लड़ाई-झगड़ा होता था। एक दिन बड़े झगड़े के बाद उसकी मां ने उसके पिता के खिलाफ केस कर दिया, जिसके बाद दोनों का तलाक हो गया। तलाक के बाद आकाश के पिता उसे अपने साथ रखना चाहते थे, लेकिन उनकी दूसरी पत्नी ने इसके लिए मना कर दिया। इसके बाद उसके पिता गुस्से में आकाश को उसकी दादी के पास छोड़कर चले गए। कुछ समय बाद आकाश की मां और पिता दोनों ने अलग-अलग जगह शादी कर ली और अपनी-अपनी जिंदगी में आगे बढ़ गए। आकाश की दादी ने उसके पिता से कहा कि वे अपने बेटे से मिलने आया करें, ताकि बच्चा अपने पिता से जुड़ा रह सके। इसके बाद उसके पिता कभी-

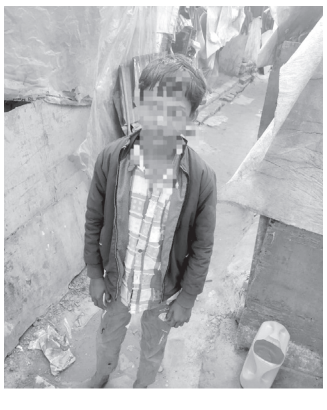

कभी उससे मिलने आने लगे। लेकिन आकाश ने बताया कि जब उसके पिता उससे मिलने आते थे, तो कई बार उसे मारते भी थे। दरअसल, उसकी दादी काम पर चली जाती थीं और आकाश घर पर अक्सर अकेला रह जाता था। अकेलेपन और आसपास के बच्चों की गलत संगत के कारण वह गाली देना, बदतमीजी से बात करना और नशा करना भी सीख गया था। जब उसके पिता उससे मिलने आते और उसका ऐसा व्यवहार देखते, तो गुस्से में उसे मारते थे। आकाश की बड़ी बहन घर पर रहकर उसे संभालने और घर के कामों में मदद करने की कोशिश करती थी। लेकिन उसकी दादी अक्सर बीमार रहती थीं, इसलिए उन्होंने बहन को भी काम पर भेज दिया। कई बार जब दादी बहन पर गुस्सा होती थीं, तो बहन भी गुस्से में आकाश को डांट देती या पीट देती थी। घर में लगातार डांट-फटकार और मारपीट के माहौल का असर धीरे-धीरे आकाश के व्यवहार पर भी पड़ने लगा। वह कई बार काम करने से मना कर देता और दादी से भी बदतमीजी से बात करने लगता, जिसके कारण उसे और ज्यादा डांट या मार पड़ती। यह घटना दिखाती है कि परिवार में होने वाले झगड़े और माता-पिता के अलगाव का सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ता है। ऐसे बच्चों को सही मार्गदर्शन, देखभाल और सहारे की जरूरत होती है, ताकि वे सही दिशा में आगे बढ़ सकें और उनका भविष्य सुरक्षित बन सके।

परीक्षाओं की तैयारी में जुटे सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर - काजल

बालकनामा की रिपोर्टर काजल जब गुरुग्राम के चक्करपुर की झुग्गी बस्ती में विजिट पर गईं, तो उन्होंने देखा कि वहां के बच्चे अपनी आने वाली अंतिम परीक्षाओं की तैयारी में काफी मेहनत कर रहे हैं। सीमित साधनों और कठिन परिस्थितियों के बावजूद बच्चे पूरे उत्साह और लगन के साथ पढ़ाई में जुटे हुए थे। शिक्षा केंद्र में यह देखा गया कि बच्चे नियमित रूप से कक्षाओं में आ रहे हैं और पूरे ध्यान से पढ़ाई कर रहे हैं। कई बच्चों ने बताया कि उनके घर छोटे हैं और वहां पढ़ाई के लिए शांत और सही माहौल नहीं मिल पाता। इसलिए वे रोज शिक्षा केंद्र में आकर अपनी पढ़ाई करते हैं, जहां उन्हें पढ़ने के लिए अच्छा वातावरण और शिक्षकों का मार्गदर्शन मिलता है। केंद्र के शिक्षकों ने बताया कि परीक्षाएं नजदीक होने के कारण बच्चों के लिए विशेष कक्षाएं भी लगाई जा रही हैं। इन कक्षाओं में बच्चों को पहले पढ़ाए गए पाठों को दोहराया जा रहा है और महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके साथ ही बच्चों को समय का सही उपयोग करने और आत्मविश्वास के साथ परीक्षा देने के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है। जब रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत की, तो उन्होंने बताया कि वे पढ़-लिखकर अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं। कुछ बच्चे शिक्षक बनना चाहते हैं, तो कुछ पुलिस अधिकारी और डॉक्टर बनने का सपना देख रहे हैं। बच्चों का कहना है कि शिक्षा ही उनके सपनों को पूरा करने का सबसे बड़ा रास्ता है। झुग्गी बस्ती में रहने वाले इन बच्चों के सामने कई चुनौतियां हैं, लेकिन इसके बावजूद उनका हौसला काफी मजबूत है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बावजूद माता-पिता भी बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। शिक्षा केंद्र और शिक्षकों का सहयोग बच्चों के आत्मविश्वास को और बढ़ा रहा है। कठिन परिस्थितियों के बावजूद इन बच्चों की मेहनत और लगन यह दिखाती है कि अगर सही मार्गदर्शन और अवसर मिलें, तो बच्चे अपने सपनों को जरूर पूरा कर सकते हैं।

जीवन कौशल कार्यशाला से बच्चों में बढ़ी साफ-सफाई की समझ

बालकनामा रिपोर्टर ओमान्स
बातूनी रिपोर्टर अधूरी

गुरुग्राम के घाटा गांव में बच्चों के बीच आयोजित जीवन कौशल कार्यशाला का सकारात्मक असर देखने को मिला। बालकनामा के बाल रिपोर्टर ओमान्स जब समुदाय के दौरे पर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि तीन-चार बच्चे अपनी गली की सफाई कर रहे थे। यह देखकर रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत की और उनसे पूछा कि वे गली की सफाई क्यों कर रहे हैं। बच्चों ने बताया कि वे चेतना संस्था के एजुकेशन सेंटर में पढ़ने जाते हैं। हाल ही में सेंटर में आयोजित लाइफ स्किल कार्यशाला के दौरान उन्हें प्रदूषण और साफ-सफाई के महत्व के बारे में बताया गया था। कार्यशाला में कार्यकर्ता ने समझाया था कि अगर हम अपने घर और आसपास के इलाके को साफ नहीं रखेंगे, तो गंदगी के कारण कई तरह की बीमारियां फैल सकती हैं।

बच्चों में से एक 12 साल की बालिका शिवानी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कुछ दिन पहले उसे दो-तीन दिन तक तेज जुकाम और बुखार रहा था। एक दिन जब वह अपनी गली के बाहर बैठी थी, तब उसने देखा कि गली में जगह-जगह कचरा और गंदगी फैली हुई है। उसी समय उसे सेंटर में टीचर द्वारा बताई गई बात याद आई कि गंदगी से बीमारियां फैलती हैं और इससे लोगों की सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है।

इसके बाद शिवानी ने अपने सेंटर के कुछ दोस्तों से इस बारे में बात की और सभी ने मिलकर गली की सफाई करने का फैसला किया। बच्चों ने झाड़ू और अन्य साधनों की मदद से गली में फैली गंदगी को साफ करना शुरू किया। सफाई करते समय कुछ बड़े लोगों ने भी बच्चों का उत्साह बढ़ाया और उनका सहयोग किया। गली के अन्य लोगों ने बच्चों की इस पहल की सराहना की और उन्हें शाबाशी दी। कुछ लोगों ने आगे बढ़कर सफाई में बच्चों की मदद भी की। बच्चों की इस छोटी-सी पहल से पूरे इलाके में सकारात्मक संदेश गया। सफाई के बाद पूरी गली पहले से कहीं ज्यादा साफ और सुंदर दिखाई देने लगी। इस बदलाव को देखकर गली के सभी लोग खुश नजर आए। बच्चों का कहना है कि अगर सभी लोग अपने आसपास सफाई का ध्यान रखें, तो हमारा वातावरण साफ और स्वस्थ बना रह सकता है।

दुर्व्यवहार के साये में बीतता बचपन

बालकनामा रिपोर्टर - तन्मय सिंह, बातूनी रिपोर्टर - सोहेल खान

गुरुग्राम की एक कम्युनिटी में बालकनामा टीम के दौरे के दौरान एक बालिका की स्थिति सामने आई, जो शारीरिक और मानसिक दुर्व्यवहार का सामना कर रही है। रानी (परिवर्तित नाम) मूल रूप से पश्चिम बंगाल की रहने वाली है और उसकी एक छोटी बहन भी है। बालकनामा टीम ने जब कम्युनिटी में बच्चों से बातचीत की, तो रानी ने अपने जीवन की परेशानियों के बारे में बताया। रानी ने कहा कि उसकी मां घरों में झाड़ू-पोछा का काम करती हैं और उसके पिता ऑटो चलाते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, इसलिए घर में अक्सर तनाव का माहौल रहता है। रानी ने बताया कि उसकी मां उसे कई बार जबरदस्ती मंदिर में भीख मांगने के लिए भेजती हैं। अगर वह मना करती है, तो उसे डांटा और मारा जाता है। कई बार तो उसे खाना भी नहीं दिया जाता। रानी के अनुसार, अगर कम्युनिटी में कहीं सामान वितरण होता है और उसे कुछ नहीं मिल पाता, तो उसकी मां उसी को दोष देती हैं और उसे सजा देती हैं। रानी ने यह भी बताया कि उसे अक्सर अपमानजनक शब्द सुनने पड़ते हैं। बार-बार डांटने और बिना वजह आरोप लगाने से उसे बहुत बुरा लगता है और उसका आत्मविश्वास भी कम होता जा रहा है। रानी पढ़ाई करना चाहती है और स्कूल जाने का सपना देखती है, लेकिन उसकी मां उसे स्कूल नहीं भेजना चाहतीं। रानी के अनुसार, उसकी मां कहती हैं कि 'लड़कियां पढ़कर क्या करेंगी, आखिर में तो घरों में काम ही करना है।' घर के अधिकांश कामों की जिम्मेदारी भी रानी पर ही है। इसी कारण उसकी पढ़ाई की इच्छा पूरी नहीं हो पा रही है। बालकनामा टीम से बातचीत के दौरान

रानी ने कहा कि वह भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाना और पढ़-लिखकर आगे बढ़ना चाहती है। लेकिन घर की परिस्थितियों और जिम्मेदारियों के कारण उसकी जिंदगी घर के कामों और भीख मांगने तक सीमित होती जा रही है। स्थिति को गंभीर मानते हुए बालकनामा रिपोर्टर तन्मय सिंह ने रानी से बात की और उसे समझाया कि बच्चों के साथ लगातार मारपीट या अपमानजनक व्यवहार करना उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकता है। उन्होंने रानी को चेतना संस्था के एजुकेशन सेंटर में मिलने वाली निःशुल्क शिक्षा के बारे में भी जानकारी दी और भरोसा दिलाया कि टीम उसके अभिभावकों से बात करके उन्हें समझाने की कोशिश करेगी।बालकनामा टीम का मानना है कि हर बच्चे को शिक्षा, सम्मान और सुरक्षित वातावरण का अधिकार है। बच्चों की भावनाओं और अधिकारों की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए, ताकि वे भी अपने सपनों को पूरा कर सकें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

अफवाहों के डर से स्कूल जाना बंद कर रहे बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर - अंजलि

गुरुग्राम की कई बस्तियों में इन दिनों बच्चा चोरी की अफवाहें तेजी से फैल रही हैं। इन अफवाहों के कारण कई बच्चे स्कूल जाना बंद कर चुके हैं। जबकि वार्षिक परीक्षाएं नजदीक हैं, फिर भी अभिभावक डर के कारण बच्चों को घर से बाहर भेजने से घबरा रहे हैं। इसका सीधा असर बच्चों की पढ़ाई पर पड़ रहा है। जब बालकनामा की रिपोर्टर अंजलि ने कम्युनिटी में जाकर स्थिति को समझने की कोशिश की, तो वहां का नजारा कुछ अलग ही था। जहां इस समय बच्चों को स्कूल में होना चाहिए था, वहीं कई बच्चे बस्ती में इधर-उधर खेलते हुए दिखाई दे रहे थे। कुछ बच्चे घरों के बाहर बैठकर टीवी देख रहे थे और कुछ मोबाइल पर गेम खेल रहे थे। वहीं कुछ बच्चे कूड़ा-कबाड़ा बीनने का काम करते भी नजर आए। रिपोर्टर अंजलि ने जब बच्चों से बात की तो उन्होंने बताया कि उनके माता-पिता ने उन्हें स्कूल जाने से मना कर दिया है। बच्चों ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से बच्चा चोरी की खबरें और अफवाहें लगातार सुनने को मिल रही हैं। इसी वजह से उनके माता-पिता डर गए हैं और उन्होंने बच्चों को घर से बाहर जाने से रोक दिया है। बच्चों ने यह भी बताया कि उन्हें खुद भी थोड़ा डर लग रहा है, लेकिन वे पढ़ाई करना चाहते हैं और स्कूल जाना चाहते हैं। कई बच्चों ने कहा कि उनकी वार्षिक परीक्षाएं आने वाली हैं और अगर वे स्कूल नहीं जाएंगे तो उनकी पढ़ाई का नुकसान हो सकता है। इसके बाद रिपोर्टर अंजलि ने बच्चों को सुरक्षित

रहने के लिए जरूरी जानकारी दी। उन्होंने बच्चों को चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 और पुलिस हेल्पलाइन नंबर 112 के बारे में बताया। साथ ही बच्चों को समझाया कि वे किसी भी अनजान व्यक्ति से बात न करें, अकेले कहीं न जाएं और हमेशा समूह में स्कूल आएं-जाएं। इसके बाद अंजलि ने कुछ अभिभावकों से भी बातचीत की। उन्होंने अभिभावकों को समझाया कि अभी तक क्षेत्र में बच्चा चोरी की कोई सत्य घटना सामने नहीं आई है और अधिकतर बातें केवल अफवाह के रूप में फैल रही हैं। इन अफवाहों के कारण बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। अंजलि ने अभिभावकों से अपील की कि वे अफवाहों पर विश्वास न करें और बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उन्हें नियमित रूप से स्कूल भेजें। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि बच्चे समूह में स्कूल जाएं और वापस भी साथ-साथ आएं, ताकि सुरक्षा बनी रहे और पढ़ाई भी जारी रह सके। अंत में बच्चों ने आपस में बात कर यह निर्णय लिया कि वे सभी मिलकर समूह में स्कूल जाएंगे और साथ ही समूह में ही घर वापस लौटेंगे, ताकि वे सुरक्षित भी रहें और अपनी पढ़ाई भी जारी रख सकें।

मेहनत और मार्गदर्शन से करण ने जीता ड्रॉइंग प्रतियोगिता में पहला स्थान

बालकनामा रिपोर्टर - फारूख
बातूनी रिपोर्टर - अजारूल

गुरुग्राम के वजीराबाद सेक्टर-52 में रहने वाले 13 वर्षीय बालक करण (परिवर्तित नाम) ने अपने स्कूल में आयोजित ड्रॉइंग प्रतियोगिता में पहला स्थान हासिल कर मेडल जीता है। यह उपलब्धि उसकी मेहनत, लगन और सही मार्गदर्शन का परिणाम है। बालकनामा टीम के समुदाय दौरे के दौरान यह जानकारी सामने आई कि करण पहले स्कूल नहीं जाता था। वह अधिकतर समय घर पर ही रहता था और कई बार कबाड़ बीनने का काम भी करता था। उसके परिवार में माता-पिता, दो बहनें और एक भाई हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं होने के कारण करण की पढ़ाई पर पहले ध्यान नहीं दिया जा सका। एक दिन चेतना संस्था के कार्यकर्ता समुदाय में पहुंचे। उन्होंने बच्चों से बातचीत की और उसी दौरान उनकी मुलाकात करण से भी हुई। कार्यकर्ता ने उससे पूछा कि वह स्कूल क्यों नहीं जाता। बातचीत के दौरान उन्होंने उसे बताया कि चेतना संस्था के एजुकेशन सेंटर पर बच्चे पढ़ने आते हैं, जहां पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद की गतिविधियां भी होती हैं और बच्चों को खाना भी दिया जाता है। शुरूआत में करण ने सेंटर आने से मना कर दिया। उसने बताया कि वह अपने पिता के साथ दुकान पर काम करने जाता है और उसके पास समय नहीं होता। इसके बाद कार्यकर्ता ने उसके माता-पिता से बात की और उन्हें बच्चे की शिक्षा के महत्व के बारे में समझाया। उन्होंने बताया कि पढ़ाई से बच्चे का भविष्य बेहतर बन सकता है। कुछ समय तक बातचीत और समझाने के बाद उसके माता-पिता तैयार हो गए। अगले ही दिन से करण चेतना के सेंटर पर आने लगा। सेंटर पर आने के बाद उसने धीरे-धीरे पढ़ना-लिखना सीखना शुरू किया। इसके साथ ही उसने ड्रॉइंग बनाना, कैरम खेलना और अन्य गतिविधियों में भाग लेना भी सीखा। लगभग तीन महीने बाद करण का पास के स्कूल में दाखिला करवा दिया गया। स्कूल जाने के बाद उसने पढ़ाई में भी रुचि दिखानी शुरू कर दी। उसके अध्यापकों ने भी बताया कि करण पढ़ाई में ध्यान देता है और उसकी कभी कोई शिकायत नहीं आई। कुछ समय बाद स्कूल में ड्रॉइंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। शुरूआत में करण थोड़ा घबरा गया कि वह क्या बनाएगा। फिर उसने सोचा कि सेंटर पर जो ड्रॉइंग बनाना सीखा है, वही कोशिश करके बनाता है। उसने पूरे मन से अपनी ड्रॉइंग तैयार की। जब उसकी ड्रॉइंग पूरी हुई तो उसके दोस्तों और अध्यापकों ने उसकी काफी सराहना की। प्रतियोगिता के परिणाम घोषित होने पर करण को पहला स्थान मिला और उसे मेडल देकर सम्मानित किया गया।

मजबूरी में करना पड़ता है काम पर दिल में है बड़े सपनों की उड़ान

बालकनामा रिपोर्टर- अनुष्की
बातूनी रिपोर्टर - अंश

खोटा कॉलोनी कम्युनिटी दौरे के दौरान बालकनामा रिपोर्टर अनुष्की की मुलाकात एक ऐसी बच्ची से हुई, जिसकी कहानी संघर्ष के साथ-साथ सपनों से भी भरी है। दौरे के दौरान अनुष्की ने देखा कि एक छोटी बच्ची एक घर की सीढ़ियों पर झाड़ू-पोछा कर रही थी। जब उससे नाम और काम के बारे में पूछा गया, तो बच्ची ने बताया कि उसका नाम प्रिया है और वह इस घर में झाड़ू-पोछा का काम करती है, जिसके लिए उसे महीने के 2000 मिलते हैं। अनुष्की ने जब उससे पूछा कि क्या वह स्कूल नहीं जाती, तो प्रिया (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह चेतना एनजीओ के सेंटर पर पढ़ने जाती है। सेंटर जाने से पहले वह थोड़ा काम करती है और फिर पढ़ाई के लिए केंद्र पहुँचती है। प्रिया ने बताया कि उसके पिता अपंग हैं और अधिक कमाई नहीं कर पाते। इसी कारण वह काम करके घर की मदद करना चाहती है। उसने यह भी बताया कि जब वह आसपास की लड़कियों को अच्छे कपड़े पहने देखती है, तो उसका भी मन करता है कि वह सुंदर कपड़े पहने। प्रिया ने अपनी एक खास इच्छा भी साझा की। उसने बताया कि अगले महीने उसके छोटे भाई का जन्मदिन है और वह उसे केक और गुब्बारों के साथ मनाना चाहती है। उसने कहा कि उसका अपना जन्मदिन कभी नहीं मनाया गया, लेकिन वह अपने छोटे भाई का जन्मदिन जरूर खास बनाना चाहती है। इसी वजह से वह काम करके कुछ पैसे जोड़ रही है। बालकनामा रिपोर्टर अनुष्की ने प्रिया को समझाया कि वह काम के कारण अपनी पढ़ाई न छोड़े और नियमित रूप से सेंटर जाती रहे। इस पर प्रिया ने बताया कि वह नियमित रूप से सेंटर जाती है, वहाँ उसका नाम दर्ज हो चुका है और उसकी फाइल भी बन गई है। प्रिया ने बताया कि सेंटर में उसने अ, आ, इ, ई, एबीसीडी और गिनती सीख ली है और अब वह धीरे-धीरे जोड़कर हिंदी पढ़ना सीख रही है। साथ ही उसे बच्चों के अधिकार, चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 और इमरजेंसी नंबर 112 के बारे में भी जानकारी मिली है। प्रिया ने यह भी बताया कि उसका अभी आधार कार्ड नहीं बना है, जिसके कारण वह स्कूल में दाखिला नहीं ले पा रही है। हालांकि उसने अपने पिता से इस बारे में बात की है और जल्द ही उसका आधार कार्ड बनवाया जाएगा। इसके बाद वह स्कूल में दाखिला लेकर अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती है। प्रिया का कहना है कि उसे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है और वह पढ़-लिखकर अपने भविष्य को बेहतर बनाना चाहती है और अपने सपनों को पूरा करना चाहती है।

काउंसलिंग के बाद पढ़ाई की ओर बढ़ी किशोरी

बालकनामा रिपोर्ट- श्रस्तिका

गुरुग्राम की जेएमडी कम्युनिटी में रहने वाली 9 वर्षीय किशोरी (परिवर्तित नाम) का जीवन पहले काफी कठिन परिस्थितियों से घिरा हुआ था। किशोरी मूल रूप से बिहार की रहने वाली है। वह अपने माता-पिता, दो बहनों और एक भाई के साथ रहती है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण घर चलाना उनके लिए आसान नहीं है। पिता की आय सीमित है, इसलिए परिवार की जिम्मेदारी मां और बच्चों पर भी आ गई थी। आर्थिक तंगी के कारण किशोरी को बहुत कम उम्र में ही कबाड़ बीनने का काम करना पड़ता था। वह रोज सुबह से शाम तक इसी काम में लगी रहती थी। पूरे दिन मेहनत करने और थक जाने की वजह से वह किसी से ज्यादा बात नहीं करती थी। धीरे-धीरे उसने लोगों से बातचीत करना भी कम कर दिया था और पढ़ाई में भी उसकी कोई रुचि नहीं थी। वह सेंटर भी नहीं आती थी और उसका बचपन खेल-कूद और पढ़ाई के बजाय काम और संघर्ष में बीत रहा था।

इतनी कम उम्र में काम करने का असर उसके शारीरिक और मानसिक विकास पर भी पड़ने लगा था। लगातार काम करने से वह जल्दी थक जाती थी और कई बार उदास भी दिखाई देती थी। यह स्थिति देखकर आसपास के लोगों और संस्था के कार्यकर्ताओं को चिंता होने लगी। किशोरी की स्थिति को देखते हुए चेतना संस्था ने हस्तक्षेप किया और उसके साथ एक काउंसलिंग सेशन आयोजित किया। इस सेशन में उसे सरल भाषा में समझाया गया कि कबाड़ बीनने जैसे काम से उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है। साथ ही उसे पढ़ाई के महत्व, साफ-सफाई और अच्छे स्वास्थ्य के बारे में भी बताया गया।

संस्था की टीम ने उसे यह भरोसा दिलाया कि वह अकेली नहीं है और अगर वह पढ़ाई करना चाहती है तो संस्था उसकी मदद करेगी। काउंसलिंग के बाद किशोरी के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव देखने को मिला। उसकी मां ने बताया कि पहले किशोरी किसी की बात नहीं मानती थी और अधिकतर समय चुप रहती थी। लेकिन अब वह पहले से ज्यादा खुश रहने लगी है, लोगों से बात करती है और नियमित रूप से सेंटर आकर पढ़ाई भी करती है।

सबसे बड़ी बात यह है कि उसने कबाड़ बीनने का काम पूरी तरह छोड़ दिया है। आज किशोरी पढ़ाई में रुचि दिखा रही है और सेंटर में आने वाले दूसरे बच्चों के साथ मिलकर सीखने की कोशिश कर रही है। उसकी इस सकारात्मक बदलाव से यह उम्मीद जगी है कि सही मार्गदर्शन और सहयोग मिलने पर बच्चों का भविष्य बेहतर बनाया जा सकता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सड़क पर गहरी खुदाई बनी बच्चों के लिए खतरा

बालकनामा रिपोर्टर - काजल

गुरुग्राम के चक्करपुर इलाके में सड़क पर की गई गहरी खुदाई अब स्थानीय लोगों और खासकर बच्चों के लिए खतरा बनती जा रही है। सड़क पर कई जगह बड़े-बड़े गड्ढे बने हुए हैं, लेकिन सुरक्षा के नाम पर न तो वहां बैरिकेडिंग की गई है और न ही कोई चेतावनी बोर्ड लगाया गया है। ऐसे में रोज इस रास्ते से गुजरने वाले लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जब मौके पर जाकर स्थिति का जायजा लिया, तो पाया कि स्कूल जाने वाले बच्चे डरते हुए सड़क पार कर रहे थे। कई जगह गड्ढे इतने गहरे हैं कि उनमें गिरने का खतरा बना रहता है। खासकर शाम के समय स्थिति और भी खतरनाक हो जाती है, क्योंकि अंधेरा होने के कारण गड्ढे साफ दिखाई नहीं देते। ऐसे में बच्चों और अन्य राहगीरों के गिरने और चोट लगने का खतरा लगातार बना रहता है। स्थानीय लोगों के अनुसार, खुदाई के दौरान एक जेसीबी मशीन भी गड्ढे में फँस गई थी, लेकिन इसके बावजूद वहां किसी तरह की मजबूत सुरक्षा व्यवस्था नहीं की गई। लोगों का कहना है कि कई बाइक सवार इन गड्ढों में गिर चुके हैं और रेहड़ी-पटरी लगाने वाले दुकानदारों का सामान भी सड़क पर गिरकर खराब हो चुका है। हाल ही में एक महिला अपने छोटे बच्चे के साथ गड्ढे में गिर गई, जिससे बच्चे के हाथ में गंभीर चोट लग गई। जब बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत की, तो उन्होंने अपनी चिंता भी जाहिर की। एक बच्चे ने बताया कि स्कूल जाते समय बहुत डर लगता है, क्योंकि गड्ढे अचानक सामने आ जाते हैं और समझ नहीं आता कि कहाँ पैर रखें। एक अन्य छात्र ने कहा कि शाम के समय गड्ढे बिल्कुल दिखाई नहीं देते, इसलिए हर दिन गिरने का डर बना रहता है। वहीं एक स्थानीय महिला ने बताया कि उनके बच्चे के हाथ में चोट लग गई और अगर हादसा थोड़ा और गंभीर होता तो बड़ी दुर्घटना हो सकती थी। स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर जल्द ही सड़क खुदाई वाले स्थान को सुरक्षित नहीं किया गया, तो किसी भी समय बड़ा हादसा हो सकता है। बालकनामा रिपोर्टर काजल ने संबंधित विभाग से मांग की है कि खुदाई वाले स्थान पर तुरंत चेतावनी बोर्ड लगाए जाएं, उचित बैरिकेडिंग की जाए और गड्ढों को जल्द से जल्द भरकर सड़क को सुरक्षित बनाया जाए, ताकि बच्चों और आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

अब कबाड़ नहीं, किताबें अच्छी लगती हैं

बालकनामा रिपोर्टर ज्योति कुमारी
बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी

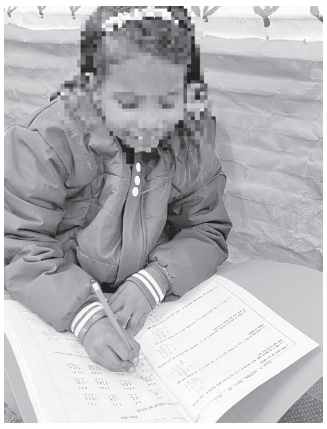

गुरुग्राम के सरस्वती विहार इलाके में रहने वाले बच्चों की जिंदगी आसान नहीं है। यहां कई बच्चे ऐसे हैं जो खेलने-कूदने और स्कूल जाने की उम्र में ही काम करने को मजबूर हैं। कुछ बच्चे रोज कचरे के ढेर में जाकर कबाड़ बीनते हैं। इससे उनकी सेहत, साफ-सफाई और पढ़ाई तीनों पर असर पड़ता है। बालकनामा की रिपोर्टर ज्योति जब इस इलाके में पहुंचीं, तो उन्होंने वहां रहने वाली 9 साल की एक बालिका रश्मि (परिवर्तित नाम) से मुलाकात की। रश्मि की कहानी सुनकर यह समझ में आता है कि कई बच्चों का बचपन किन मुश्किलों के बीच गुजर रहा है। रश्मि मूल रूप से बिहार की रहने वाली है। वह अपने माता-पिता और बड़ी बहन के साथ गुरुग्राम के सरस्वती विहार इलाके में रहती है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उसे छोटी उम्र में ही कबाड़ बीनने के काम में लगना पड़ा। वह रोज कचरे के ढेर से प्लास्टिक और अन्य कबाड़ चुनती थी। इस वजह से उसके कपड़े अक्सर गंदे रहते थे और उसकी सेहत पर भी असर पड़ रहा था। बालकनामा की बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी ने जब रश्मि से बातचीत की, तो उसने अपने अनुभव साझा किए। रश्मि ने बताया,'पहले मैं रोज कबाड़ा चुनने जाती थी। मुझे साफ रहना या पढ़ना अच्छा नहीं लगता था। क्लास में भी मैं शोर करती थी और किसी की बात नहीं सुनती थी।' रिपोर्टिंग के दौरान यह भी पता चला कि गुरुग्राम में रश्मि का काउंसलिंग सत्र कराया गया। काउंसलिंग के दौरान कॉउंसलर ने उससे बहुत प्यार से बात की और उसकी परेशानियों को समझने की कोशिश की। उसे साफ-सफाई, स्वास्थ्य और अच्छे व्यवहार के बारे में बताया गया। साथ ही पढ़ाई के महत्व के बारे में भी समझाया गया। धीरे-धीरे रश्मि में बदलाव देखने को मिला। अब वह अपनी साफ-सफाई का ध्यान रखने लगी है। वह हाथ-पैर साफ रखती है और गंदगी से दूर रहने की कोशिश करती है। लक्ष्मी से बात करते हुए रश्मि ने मुस्कुराते हुए कहा,'अब मुझे पढ़ाई अच्छी लगती है। मैं अक्षर पहचान रही हूँ और रोज कुछ नया सीखने की कोशिश करती हूँ।' अब रश्मि को पढ़ाई से जोड़ा गया है और उसके परिवार का सहयोग भी उसे मिल रहा है। उसकी आंखों में अब डर की जगह एक नई उम्मीद दिखाई देती है – आगे बढ़ने और कुछ नया सीखने की उम्मीद।

चक्करपुर में बच्चों ने उत्साह के साथ मनाई होली

बालकनामा रिपोर्टर - काजल

होली के पावन अवसर पर गुरुग्राम के चक्करपुर क्षेत्र में स्थित चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र पर बच्चों ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ होली का त्योहार मनाया। इस अवसर पर बच्चों ने न केवल रंगों के इस पर्व का आनंद लिया, बल्कि इसके महत्व के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम की शुरुआत में बालकनामा रिपोर्टर काजल ने बच्चों से पूछा कि आज सेंटर पर क्या मनाया जाएगा। इस पर 11 साल की रिया (परिवर्तित नाम) ने उत्साहपूर्वक जवाब दिया, 'आज हमारे सेंटर पर होली मनाई जाएगी।' यह सुनकर सभी बच्चे खुशी से झूम उठे और तालियां बजाने लगे। इसके बाद काजल ने बच्चों से होली के महत्व के बारे में पूछा। बच्चों ने अपने-अपने विचार साझा करते हुए बताया कि इस दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं, एक-दूसरे के साथ रंग खेलते हैं और घरों में स्वादिष्ट पकवान बनाए जाते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि होली पर गुझिया विशेष रूप से बनाई और खाई जाती है। हालांकि, कुछ बच्चों को इसके वास्तविक महत्व की पूरी जानकारी नहीं थी। इस पर रिपोर्टर काजल ने बच्चों को सरल और रोचक भाषा में समझाया कि होली रंगों का त्योहार है, जो प्रेम, एकता और खुशियों का प्रतीक है। यह हमें बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देता है। होली से एक दिन पहले होने वाला होलिका दहन इस बात का प्रतीक है कि सच्चाई और अच्छाई की हमेशा विजय होती है। यह पर्व बसंत ऋतु के आगमन की खुशी में भी मनाया जाता है और लोगों के बीच प्रेम, सौहार्द और भाईचारे को बढ़ावा देता है। बच्चों ने होली के महत्व को समझते हुए खुशी-खुशी तालियां बजाई और अपने अनुभव साझा किए। इसके बाद सभी बच्चों ने नाच-गाने और रंगों के साथ मिलकर होली का भरपूर आनंद लिया। कार्यक्रम के अंत में बच्चों ने मिलकर गुझिया खाई और एक-दूसरे को 'हैप्पी होली' कहकर शुभकामनाएं दीं। इस प्रकार चेतना संस्था के सेंटर पर बच्चों ने खुशी, उत्साह और आपसी भाईचारे के साथ होली का त्योहार मनाया, जो उनके लिए एक यादगार अनुभव बन गया।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

झुग्गियों की तोड़फोड़ से कई परिवार बेघर, बच्चों के सामने बढ़ी मुश्किलें

बालकनामा रिपोर्टर - अनुष्की
बातूनी रिपोर्टर - मीना

गुरुग्राम के खोटा कॉलोनी समुदाय में हाल ही में झुग्गियों पर की गई तोड़फोड़ के कारण कई परिवारों के सामने रहने का गंभीर संकट खड़ा हो गया है। झुग्गियां टूट जाने से कई बच्चे और उनके परिवार सर्दी के मौसम में खुले आसमान के नीचे रात बिताने को मजबूर हो गए हैं। जिन लोगों के घर टूटे हैं, वे अपना बचा हुआ सामान संभालने और रहने के लिए नई जगह ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं। बालकनामा रिपोर्टर अनुष्की जब समुदाय के दौरे पर गईं, तो उन्होंने देखा कि कई झुग्गियां पहले ही तोड़ी जा चुकी थीं और लोग जल्दी-जल्दी अपना सामान बाहर निकालने में लगे हुए थे। आसपास मलबा फैला हुआ था और कई परिवार अपने जरूरी सामान को बचाने की कोशिश कर रहे थे। इसी दौरान उनकी मुलाकात 11 वर्ष की एक बालिका दीक्षा (परिवर्तित नाम) से हुई, जो घबराई हुई अपनी झुग्गी से सामान बाहर निकाल रही थी। बातचीत में दीक्षा ने बताया कि कुछ समय पहले ही झुग्गियों पर बुलडोजर चलाया गया है। कई परिवारों के सदस्य उस समय काम पर गए हुए थे, इसलिए उनका काफी सामान मलबे के नीचे दब गया। दीक्षा के माता-पिता भी काम पर गए हुए थे, इसलिए वह अकेले ही अपना सामान बचाने की कोशिश कर रही थी। दीक्षा ने डरते हुए बताया, 'मुझे डर लग रहा है कि कहीं बुलडोजर दोबारा न आ जाए और हमारा भी सारा सामान दब जाए। इसलिए मैं जल्दी-जल्दी सामान बाहर निकाल रही हूं।' दीक्षा ने यह भी बताया कि उसने कई बच्चों और परिवारों को रात में खुले आसमान के नीचे कंबल ओढ़कर सोते हुए देखा है। काम से लौटने के बाद लोग अपने सामान के पास ही ठंड में रात बिताने को मजबूर हैं, क्योंकि उनके पास फिलहाल रहने के लिए कोई सुरक्षित जगह नहीं है। रिपोर्टर अनुष्की ने बच्ची को सांत्वना देते हुए कहा कि जल्द ही उसके माता-पिता आ जाएंगे और रहने के लिए दूसरी जगह का इंतजाम हो जाएगा। बातचीत के दौरान जब रिपोर्टर ने पूछा कि क्या वह सेंटर पर पढ़ने के लिए जाती है, तो दीक्षा ने बताया कि वह नियमित रूप से पढ़ाई के लिए सेंटर जाती है। रिपोर्टर ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा कि अगर उसके माता-पिता पास में नई झुग्गी लेते हैं, तो वह अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए एजुकेशन सेंटर जरूर आए। इस पर दीक्षा ने उम्मीद जताई कि जल्द ही उसके माता-पिता नई झुग्गी ढूंढ लेंगे और वह फिर से सेंटर आकर अपनी पढ़ाई शुरू करेगी।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

गंदे पानी में होने वाली मछलियों को खाने से हो रही खतरनाक बीमारियां

बालकनामा रिपोर्टर - तन्मय सिंह

गुरुग्राम के पलड़ा ढाणी समुदाय में गंदे और प्रदूषित पानी में पनप रही मछलियों को पकड़कर बेचने और खाने का मामला सामने आया है, जो बच्चों और समुदाय के लोगों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है।

बालकनामा रिपोर्टर तन्मय सिंह जब समुदाय में विजिट पर पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि झुग्गियों से निकलने वाला गंदा पानी एक जगह जमा हो रहा है। इसी पानी में लोगों ने मछलियों के बीज डाल दिए हैं, जिसके कारण वहाँ बड़ी संख्या में मछलियाँ पनप गई हैं। एक बच्चे ने सबसे पहले इन मछलियों को देखा और उन्हें पकड़ने की कोशिश की। इसके बाद यह बात अन्य बच्चों तक पहुँची और धीरे-धीरे कई बच्चे वहाँ जाकर मछलियाँ पकड़ने लगे। बच्चे इन मछलियों को पकड़कर समुदाय में ही बेचने लगे, जिससे उन्हें कुछ पैसे भी मिलने लगे।

जब रिपोर्टर ने बच्चों से बातचीत की, तो उन्होंने बताया कि वे इन मछलियों को पकड़कर बेचते हैं और इससे उन्हें कमाई होती है। इसके बाद रिपोर्टर ने उन लोगों से भी बात की, जो इन मछलियों को खरीदते हैं। एक व्यक्ति ने बताया कि वह इन्हें सस्ते दाम में खरीदकर आगे बेच देता है।

रिपोर्टर तन्मय सिंह ने बच्चों और स्थानीय लोगों को समझाया कि गंदे और प्रदूषित पानी में पली मछलियाँ स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक होती हैं। इन्हें खाने से टाइफाइड, डायरिया जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं और शरीर में हानिकारक तत्व जमा हो सकते हैं, जो आगे चलकर गंभीर समस्याओं का कारण बनते हैं। इसके अलावा, बच्चों ने यह भी बताया कि उस पानी में जाने से उन्हें एलर्जी की समस्या होने लगी है, जैसे हाथ-पैरों में खुजली और फुंसियाँ होना। रिपोर्टर ने बच्चों को जागरूक करते हुए कहा कि वे इस तरह के गंदे पानी में न जाएँ और न ही ऐसी मछलियों को पकड़ें या बेचें।

साथ ही उन्होंने यह भी समझाया कि इस तरह की गतिविधियाँ न सिर्फ उनके लिए, बल्कि पूरे समुदाय के लिए भी खतरनाक हो सकती हैं।समझाने के बाद बच्चों ने आश्वासन दिया कि वे आगे से वहाँ नहीं जाएंगे और मछलियाँ पकड़ने या बेचने का काम बंद कर देंगे, ताकि वे स्वयं और समुदाय के अन्य लोग सुरक्षित रह सकें।

बच्चों के सर्वांगीण विकास में खेलों का महत्व

बालकनामा रिपोर्टर - नंदिनी

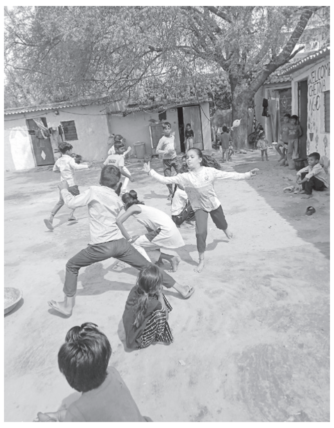

बालकनामा रिपोर्टर नंदिनी जब गुरुग्राम के समुदायों में विजिट पर गईं, तो उन्होंने देखा कि आजकल बच्चे पढ़ाई और घर के कामों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे खेलकूद से दूर होते जा रहे हैं।इसका प्रभाव उनके शारीरिक और मानसिक विकास पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। रिपोर्टर नंदिनी ने बताया कि आज के समय में यह बेहद जरूरी है कि बच्चे रोज कम से कम 30 मिनट तक किसी न किसी शारीरिक गतिविधि या खेल में भाग लें। इससे उनका शरीर स्वस्थ रहता है और वे कई बीमारियों से भी दूर रहते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि खेलकूद बच्चों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। खेल के माध्यम से बच्चे अपनी भावनाओं को समझते हैं, आत्म-अनुशासन सीखते हैं और स्वयं को दूसरों के सामने बेहतर तरीके से व्यक्त कर पाते हैं। साथ ही, खेल बच्चों में समस्या को समझने और उसका समाधान निकालने की क्षमता भी विकसित करते हैं। खेलने से बच्चों के शरीर को अनेक लाभ मिलते हैं। इससे उनकी हड्डियाँ, मांसपेशियाँ और जोड़ मजबूत होते हैं, शरीर का संतुलन बना रहता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। इसके अलावा, खेल बच्चों में ऊर्जा बनाए रखते हैं और उन्हें मानसिक रूप से भी स्वस्थ बनाए रखते हैं। रिपोर्टर नंदिनी ने यह भी बताया कि खेलकूद बच्चों के तनाव और चिंता को कम करने में सहायक होते हैं।इससे बच्चों में सकारात्मक सोच विकसित होती है और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। उन्होंने कहा कि खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इसलिए अभिभावकों और समुदाय को चाहिए कि वे बच्चों को नियमित रूप से खेलने के लिए प्रेरित करें, ताकि वे शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहकर अपने जीवन में आगे बढ़ सकें।

रिहान ने खुद खरीदी अपनी और बहन की स्कूल ड्रेस

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः रिहान

जयपुर की चेतना बस्ती, खोर से एक सकारात्मक बात सामने आई है, जहाँ एक बच्चे की मेहनत, आत्मसम्मान और शिक्षा के प्रति लगन स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बालकनामा रिपोर्टर दामिनी को बस्ती विजिट के दौरान जानकारी मिली कि 11 वर्षीय रिहान (नाम परिवर्तित), जो पहले नियमित रूप से सेंटर और विद्यालय आता था, कुछ दिनों से अनुपस्थित है। जानकारी लेने पर पता चला कि वह शादियों में कैटरिंग का काम कर रहा है। जब इस बारे में रिहान और उसके परिवार से बात की गई, तो स्थिति स्पष्ट हुई। रिहान के माता-पिता ने बताया कि वह केवल कुछ दिनों के लिए काम कर रहा है, ताकि अपनी और अपनी छोटी बहन के लिए स्कूल ड्रेस खरीद सके। आर्थिक स्थिति सीमित होने के बावजूद परिवार शिक्षा को प्राथमिकता दे रहा है। रिहान ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं अपनी और बहन की स्कूल ड्रेस खुद लेना चाहता था। अब मैं ड्रेस खरीदकर परीक्षा देने जाऊँगा। मुझे पढ़ाई करनी है और आगे बढ़ना है।' रिहान की यह पहल उसके आत्मसम्मान, जिम्मेदारी और पढ़ाई के प्रति समर्पण को दर्शाती है। पहले वह कुछ समय के लिए पढ़ाई से दूर हो गया था, लेकिन अब उसने दोबारा पढ़ाई पर ध्यान देना शुरू किया है। वह नियमित रूप से पढ़ाई कर रहा है और अपने छोटे भाई-बहनों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। माता-पिता भी अपने बेटे के इस बदलाव से खुश हैं। उनका कहना है कि अब रिहान शिक्षा के महत्व को समझने लगा है और सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

मोबाइल गेम की लत में फँसता बचपन

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः इरफान

बगराना बस्ती में बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने समुदाय का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने रास्ते में एक बालक को मोबाइल चलाते हुए देखा। बालक की स्थिति को समझने के लिए उससे बातचीत की गई। बातचीत के दौरान 10 वर्षीय एक बालक (परिवर्तित नाम - इरफान) से पूछा गया कि वह सामान्य गेम खेल रहा है या पैसों वाला गेम। इस पर बालक ने बताया कि वह पैसों पर आधारित गेम खेलता है और अब तक लगभग 2,000 से 2,500 रुपये तक खर्च कर चुका है। आगे पूछने पर उसने बताया कि उसे अलग से पैसे नहीं मिलते, बल्कि घर से खाने-पीने के लिए मिलने वाले पैसों को बचाकर वह गेम में खर्च कर देता है। बालक ने यह भी बताया कि वह अपने माता-पिता से छुपकर यह गेम खेलता है और उन्हें इसकी जानकारी नहीं है। जब उसके परिवार के बारे में पूछा गया, तो उसने बताया कि उसके माता-पिता दिहाड़ी मजदूरी करते हैं और काम की तलाश में अधिकतर समय बाहर रहते हैं, जिससे बच्चों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते। इस प्रकार की स्थिति बच्चों के भविष्य के लिए चिंताजनक है। कम उम्र में पैसों वाले गेम की लत बच्चों को न केवल आर्थिक नुकसान की ओर ले जा रही है, बल्कि उनकी शिक्षा पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रही है। ऐसे बच्चे धीरे-धीरे पढ़ाई से दूर होते जा रहे हैं और उनका ध्यान पढ़ाई के बजाय मोबाइल और गेम की ओर बढ़ता जा रहा है। रिपोर्टर ने बालक को ऑनलाइन गेम के दुष्प्रभावों के बारे में समझाया और उसे ऐसे गेम से दूर रहने के लिए प्रेरित किया। साथ ही यह भी बताया कि समय का सही उपयोग पढ़ाई और सकारात्मक गतिविधियों में करना जरूरी है, ताकि वह अपने भविष्य को बेहतर बना सके।

बस्ती के बच्चों ने जीती हिंदी सुलेख प्रतियोगिता

बालकनामा रिपोर्टर - काजल

गुरुग्राम के चक्करपुर क्षेत्र की बस्ती में रहने वाले बच्चों ने हिंदी सुलेख प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर अपने परिवार, शिक्षकों और समुदाय का नाम रोशन किया है।बालकनामा रिपोर्टर काजल ने बच्चों से मिलकर उनकी इस उपलब्धि के बारे में बातचीत की। बातचीत के दौरान बच्चों ने अपना परिचय देते हुए बताया कि उनका नाम शिखा 12 वर्ष (परिवर्तित नाम)और दीप कुमार 11 वर्ष (परिवर्तित नाम) है। रिपोर्टर ने जब उनसे प्रतियोगिता के बारे में पूछा, तो बच्चों ने बताया कि उन्होंने अपने स्कूल की ओर से हिंदी सुलेख प्रतियोगिता में भाग लिया था। शिखा ने खुशी जाहिर करते हुए बताया कि उसने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसे पुरस्कार के रूप में तीन किताबें, एक पेंसिल बॉक्स और एक पेन बॉक्स दिया गया। वहीं दीप कुमार ने बताया कि उसने तृतीय स्थान हासिल किया, जिसके लिए उसे दो किताबें और एक पेंसिल बॉक्स पुरस्कार के रूप में मिले। बच्चों ने कहा कि इस प्रतियोगिता में भाग लेकर उन्हें बहुत अच्छा लगा और अपनी सफलता पर उन्हें गर्व है। उन्होंने यह भी बताया कि नियमित अभ्यास और शिक्षकों के मार्गदर्शन से उन्हें यह सफलता हासिल हुई है। उनकी इस उपलब्धि से उनके माता-पिता और सेंटर के शिक्षक भी बेहद खुश हैं और उन्होंने बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए शाबाशी दी। अंत में बच्चों ने कहा कि उनके जैसे अन्य बच्चों को भी प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए, ताकि वे भी अपनी प्रतिभा दिखा सकें, आगे बढ़ सकें और अपने परिवार व शिक्षकों का नाम रोशन कर सकें।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और Mcarbon Tech Innovation Pvt. Ltd. का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471